पहली बार पता चला धूमपान फेफड़ों के कैंसर का कारण है

1957 में आज ही ब्रिटेन की मेडिकल रिसर्च काउंसिल ने एक रिपोर्ट जारी की, जिसमें बताया गया कि धूमपान की वजह से फेफड़ों का कैंसर हो सकता है। यह रिपोर्ट 25 साल के शोध पर आधारित थी।

The Ladies Mercury.

पहली महिला पत्रिका लेडीज मरकरी प्रकाशित हुई

1693 में आज ही लंदन में दुनिया की पहली महिला पत्रिका लेडीज मरकरी के पहले अंक का प्रकाशन हुआ था। द एथेंसियन सोसाइटी और इसके संस्थापक जॉन डनटन द्वारा इस पत्रिका को केवल चार सप्ताह के लिए ही प्रकाशित किया गया था।

हिंदी सिनेमा के सदाबहार संगीतकार थे आरडी बर्मन

पंचम दा के नाम से मशहूर राहुल देव बर्मन का जन्म 1939 में आज ही कोलकाता में हुआ था। पिता सचिन देव बर्मन हिंदी सिनेमा के प्रख्यात संगीतकार थे। बावजूद इसके उन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई। मात्र नौ साल की उम्र में 1956 में आई फिल्म फंटूश के एक गाने के लिए धुन बनाई। अपने चालीस साल के करियर में 331 फिल्मों में संगीत दिया। बतौर संगीतकार उनकी अंतिम फिल्म 1942 ए लव स्टोरी थी। तीन बार फिल्मफेयर पुरस्कार से नवाजे गए। 4 जनवरी 1994 को दुनिया को अलविदा कह गए।

इधर-उधर की

घरेलू काम के एवज में मिले करोड़ों रुपये

ब्यूनस आयर्स, एजेंसी : अर्जेंटीना में एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है। यहां की एक स्थानीय अदालत ने पति को 27 साल तक घर का काम करने के एवज में पत्नी को 1.27 करोड़ रुपये देने का आदेश दिया है। महिला की उम्र अब 70 साल हो चुकी है। वह काफी पढ़ी-लिखी है। उसके पास अर्थशास्त्र की डिग्री है, लेकिन शादी के बाद उसने अपना करियर छोड़ दिया था, क्योंकि दोनों ने यह फैसला लिया था कि पति नौकरी करेगा और पत्नी घर संभालेगी। दोनों की शादी साल 1981 में हुई थी, लेकिन 2011 में दोनों का तलाक हो गया। तलाक के समय महिला की उम्र लगभग 60 साल थी। उसके पास कमाई का कोई जरिया नहीं था। लिहाजा मामला स्थानीय अदालत में पहुंचा। महिला ने अदालत में बताया कि वह आर्थिक तंगी से जूझ रही है, जिसके बाद न्यायाधीश विक्टोरिया फामा ने यह फैसला सुनाया। न्यायाधीश ने अपना फैसला सुनाते हुए कहा कि समाज में आज भी महिलाओं द्वारा किए जाने वाले घर के काम की कोई अहमियत नहीं होती। उन्हें इसके बदले कोई तनख्वाह नहीं दी जाती है।

शोध अनुसंधान

साबुन और टूथपेस्ट से कमजोर होती हैं हड्डियां

साबुन, टूथपेस्ट और पर्सनल केयर के अन्य उत्पादों को लेकर चौंकाने वाला शोध सामने आया है। एक अध्ययन के मुताबिक, इन उत्पादों में पाए जाने वाले रसायन ट्राइक्लोजन के संपर्क में आने से महिलाओं में ऑस्टियोपोरोसिस का खतरा बढ़ जाता है। इस बीमारी में हड्डियां कमजोर हो जाती हैं। ट्राइक्लोजन ऐसा रसायन है जो हार्मोन का स्राव करने वाली ग्रंथियों को प्रभावित करता है। विभिन्न उत्पादों में एंटी-बैक्टीरिया के रूप में इसका प्रयोग किया जाता है। ट्राइक्लोजन से हड्डियों पर पड़ने वाले असर को लेकर यह अपनी तरह का पहला शोध है। अध्ययन के लिए 1,848 महिलाओं से जुड़े डाटा का विश्लेषण किया गया। जिन महिलाओं में ट्राइक्लोजन का स्तर ज्यादा था, उनमें हड्डियों से जुड़ी समस्याएं पाई गईं। कुछ जीवों पर ट्राइक्लोजन के असर शोध में सामने आ चुके हैं। - प्रेट्र

समयपूर्व प्रसव से बच्चों की दिमागी सेहत पर असर

एक अध्ययन में पाया गया है कि समयपूर्व प्रसव से बच्चों के दिमाग पर असर पड़ता है। इससे सोते समय उनके दिमाग की गतिविधियों में बदलाव होता है और भविष्य में दिमागी सेहत प्रभावित होती है। वैज्ञानिकों ने अध्ययन के लिए 94 नवजात शिशुओं के डाटा जुटाए। इनमें से 42 का जन्म गर्भ के 27वें हफ्ते में हुआ था, जबकि 52 का जन्म पूरे समय में हुआ था। शोधकर्ता डॉ. लुका कोची ने कहा, 'नींद की गुणवत्ता दिमागी सेहत का महत्वपूर्ण मानक है। विशेषरूप से नवजात शिशुओं में इसका बहुत महत्व है। हमने समय से पहले जन्मे और पूरे समय पर जन्मे बच्चों की नींद का दो हफ्ते तक अध्ययन किया। पूरे समय पर जन्मे बच्चों में सोते समय दिमाग जिस तरह काम करता है, समयपूर्व जन्मे बच्चों के मामले में वैसा नहीं मिला।' - एएनआइ

अब अंतरिक्ष में खोजे गए ग्रहों का भी होगा नामकरण

न्यूयॉर्क टाइम्स से

▸ इंटरनेशनल एस्ट्रोनॉमिकल यूनियन अब सभी देशों को देगा नामकरण का मौका

वाशिंगटन : एचडी-156411 और एचएटी-पी-5बी जैसे नाम देखकर सबसे पहले यही ध्यान आता है कि यह किसी जासूसी एजेंट का कोड होगा। असल में ऐसा है नहीं। ऐसे नाम हमारे सौरमंडल के बाहर खोजे गए ग्रहों, पिंडों और तारों के रखे गए हैं। असल में किसी भी खोज के साथ एक अच्छी बात यह होती है कि खोजी गई वस्तु का नाम रखने का मौका मिलता है। हमारे अंतरिक्ष में तो इतने अलग-अलग ग्रह, पिंड और तारे हैं कि धरती पर धूल के कणों की संख्या भी उनसे कम रह जाएगी।

इस विशाल संभावना के बावजूद इन अंतरिक्षीय पिंडों के लिए अच्छे नाम नहीं मिल पाते हैं। अब इस कमी को दूर करने की दिशा में बड़ा कदम उठा है। इंटरनेशनल एस्ट्रोनॉमिकल यूनियन (आइएयू) ने अब इन पिंडों के विधिवत नामकरण की तैयारी की है। अंतरिक्षीय पिंडों के नामकरण की व्यवस्था आइएयू ही संभालता है। अब उसने इस प्रक्रिया में तमाम देशों को जोड़ने की तैयारी की है। 1919 में स्थापित आइएयू ने अपनी 100वीं सालगिरह के मौके पर यह पहल की है। इस पहल को आइएयू 100 नेमएक्सोवल्ड्र्स कहा गया है। आइएयू से जुड़े एडुआर्डो पेंटाडो ने कहा कि यह प्रक्रिया अभी शुरुआती दौर में है, लेकिन लोगों की जबर्दस्त प्रतिक्रिया मिली है। कई देशों में एक पिंड के लिए सैकड़ों नाम के आवेदन मिल रहे हैं। ग्रीस में एक पिंड के लिए पहले हफ्ते में ही 1,500 नाम आ गए। इससे जुड़े लोगों का कहना है कि प्रोजेक्ट शुरू होते की नाम आने का सिलसिला शुरू हो गया।

1919 में स्थापित आइएयू ने 100वीं सालगिरह के मौके पर यह पहल की है। प्रतीकात्मक

अभी क्या है व्यवस्था? : नासा की केपलर व टेस जैसी दूरबीनों और अन्य अध्ययनों के जरिये हमारी आकाशगंगा में 1995 से अब तक करीब 4,000 ग्रह खोजे जा चुके हैं। स्थापित व्यवस्था के तहत जो भी किसी ग्रह या चांद को खोजता है, वह उसके लिए आइएयू को नाम सुझा सकता है। इसके अलावा किसी अंतरिक्षीय पिंड को नाम देने का कोई भी तरीका नहीं है। आइएयू से 93 देशों में 11,000 सदस्य जुड़े हैं।

अब सभी देशों को मिलेगा मौका : आइएयू की नई पहल से 79 देश जुड़े हैं। यूनियन ने इन सभी देशों के लिए तारों और ग्रहों की सूची तैयार की है, जिनका नामकरण करना होगा। जिस ग्रह या तारे को जिस देश के हिस्से में नामकरण के लिए रखा गया है, उस देश से वह अंतरिक्षीय पिंड किसी छोटे दूरबीन की मदद से स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अमेरिका के हिस्से में करीब 255 प्रकाशवर्ष दूर स्थित तारे एचडी-17156 के नामकरण की जिम्मेदारी आई है। यह तारा हमारे सूरज से थोड़ा बड़ा और गर्म है। इस ग्रह बृहस्पति से करीब तीन गुना बड़ा है और 21 दिन में इसकी परिक्रमा पूरी कर लेता है। इस लिहाज से निश्चित तौर पर यह ग्रह जीवन के योग्य नहीं होगा।

तय नियम से रखा जाएगा नाम : नई व्यवस्था के तहत हर देश से आइएयू के प्रतिनिधि कुछ नाम चुनकर भेजेंगे। इसके बाद कुछ नियमों के आधार उनमें से ग्रह के लिए नाम चुना जाएगा। नियमों के तहत नाम का आसानी से उच्चारण होना चाहिए, धार्मिक शब्द नहीं होना चाहिए, राजनीति या सेना से संबंध नहीं होना चाहिए और किसी जीवित व्यक्ति का नाम नहीं होना चाहिए।

वैज्ञानिकों ने बनाया नया टूल दवा लेने से मिलेगा छुटकारा

स्पेक्ट्रम

ह्यूस्टन, प्रेट्र : वैज्ञानिकों ने एक अंगूर के आकार की ब्लूटूथ मेडिकल डिवाइस विकसित की है। जिसे शरीर में इम्प्लांट करने पर बाहर से कंट्रोल किया जा सकेगा। इसके माध्यम से उन लोगों को फायदा मिलेगा जिनको पुरानी बीमारियां हैं और नियमित अंतराल के बाद दवाइयां लेनी पड़ती हैं। ये बीमारियां गठिया, मधुमेह और हृदय रोग की हो सकती हैं। नई डिवाइस तय समय पर अपने आप ही दवा शरीर में पहुंचा देगी।

अमेरिका के ह्यूस्टन मेथॉडिस्ट हॉस्पिटल के शोधकर्ताओं ने इस डिवाइस का उपयोग करते हुए मरीजों में समय पर और तय खुराक पहुंचाने का सफलतापूर्वक परीक्षण किया है। इस विधि को नैनो चैनल डिलीवरी सिस्टम (एनडीएस) नाम दिया गया है। बैटरी से चलने वाले इस इम्प्लांट में एक माइक्रोचिप होती है जो ब्लूटूथ का काम करती है।

शोधकर्ताओं ने बताया कि यह डिवाइस एक साल तक बिना चार्ज किए, और बिना रिफिल किए रोगियों को दवा मुहैया करा सकती है। उन्होंने बताया कि अगले साल इस शोध का परीक्षण अंतरिक्ष में किया जाएगा। 'लैब आन ए चिप' नामक पत्रिका में इस अध्ययन को प्रकाशित किया गया है।

ह्यूस्टन मेथॉडिस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट के एलेसेंड्रो ग्राटोनी ने बताया कि यह ड्रग इम्प्लांट भविष्य में मरीजों की कई मुश्किलें आसान करेगा। यह रोगियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार और स्वास्थ्य खर्चे पर कमी दोनों प्रदान करेगा।

जरूरत होने पर अपने आप दवा रिलीज करेगी नई डिवाइस। प्रतीकात्मक

शोधकर्ताओं ने बताया कि यह उनके शोध का प्रथम चरण है वह ऐसे नैनो चैनल डिलीवरी सिस्टम पर काम कर रहे हैं, जिसके माध्यम से एचआइवी और कैंसर तक में रोकथाम लगाई जा सके। उन्होंने बताया कि वह अपनी इस नई तकनीक का अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन में अगले साल परीक्षण करेंगे। शोधकर्ताओं को उम्मीद है कि एक दिन चिकित्सकों के पास पर्याप्त रूप से यह अवसर होंगे कि वह टेलीमेडिसिन के माध्यम से मरीजों का उपचार कर सकें।

50 साल बाद खुलेंगे चंद्रमा के नमूने

शुरु होगा शोध ▸ अपोलो मिशन के दौरान जुटाए गए नमूनों का किया जाएगा अध्ययन

2024 तक नासा फिर से चंद्रमा पर जाने की तैयारी कर रहा है

382 किलोग्राम है चंद्रमा से सैंपल के रूप में लाए गए मिट्टी और चट्टानों के टुकड़ों का भार, ये सैंपल नासा के जॉनसन स्पेस सेंटर में सुरक्षित रखे गए हैं, जिनमें अधिकतर सैंपल वैक्यूम में रखे हैं।

▸ 20 जुलाई को नासा के अपोलो मिशन के 50 साल पूरे हो जाएंगे। अब नासा अपने नए मिशन आर्टिमस की तैयारी में जुटा है

ह्यूस्टन, एपी : अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा अपने अपोलो मिशन द्वारा चंद्रमा की सतह से जुटाए गए कई नमूनों को 50 सालों के बाद पहली बार खोलने जा रहा है।

जानसन स्पेस सेंटर की लेबोरेटरी में सैंपल के रूप में नासा का यह खजाना रखा गया है। जिसमें से कुछ सैंपल को पहले छुआ गया है और कुछ अभी तक अनछुए हैं। प्रतिबंधित प्रयोगशाला अमेरिकी अंतरिक्ष यात्रियों द्वारा चंद्रमा से इकट्ठा किए गए उन सैकड़ों पाउंड की चट्टानों का घर है जिन्हें लगभग आधी सदी पहले यहां बंद कर दिया गया था। नासा अब उन प्राचीन नमूनों में से कई पर शोध करने जा रहा है। नासा का कहना है कि भूवैज्ञानिक 21वीं की नई तकनीक से उन नमूनों का परीक्षण कर अंतरिक्ष के नए रहस्य खोलेंगे। बता दें कि 20 जुलाई को अपोलो मिशन को पूरे 50 साल हो रहे हैं। नासा के अपोलो मिशन के सैंपल क्यूरेटर रेयान जिगलर ने बताया कि यह एक संयोग ही है कि हम सैंपलों को अपोलो मिशन की पचासवीं वर्षगांठ के मौके पर खोल रहे हैं।

उन्होंने बताया कि हमें बहुत सतर्कता बरतनी होगी क्योंकि हम फिर से चांद पर जा रहे हैं। बता दें कि नासा का लक्ष्य है कि 2024 तक चंद्रमा की धरती पर फिर से अंतरिक्ष यात्रियों को उतारा जाए। जबकि, अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप का जोर है कि नासा अपना ध्यान चंद्रमा के बजाए मंगल पर लगाए। वहीं, आम सहमति यह है चंद्रमा पृथ्वी से करीब है और यहां ज्यादा ध्यान दिए जाने की जरूरत है। चंद्रमा से पृथ्वी की दूरी 3,86,000 किलोमीटर है। यानी पृथ्वी से चंद्रमा का रास्ता दो या तीन दिन का है।

नासा के जॉनसन स्पेस सेंटर की लूनर लैब में रखा अपोलो मिशन के दौरान चंद्रमा से लाया गया चट्टान का टुकड़ा। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह चंद्रमा की सबसे पुरानी चट्टान का हिस्सा है। चंद्रमा बनने के बाद जब यह ठंडा हुआ तो इसके तुरंत बाद जो परतें बनी यह उसका ही हिस्सा है। एपी

नई तकनीक से पता चलेंगे रहस्य

नासा के जानसन स्पेस सेंटर में 1969 से 1972 तक चंद्रमा से इकट्ठा किए गए सैंपल को रखा गया है। इनका भार 842 पाउंड (382 किग्रा) है। मिट्टी और चट्टानों के कुछ सैंपल वैक्यूम पैक रखे गए हैं जो अभी तक पृथ्वी के वायुमंडल में खोले तक नहीं गए हैं। शोधकर्ताओं ने बताया कि ओपोलो के युग में तकनीक इतनी सक्षम नहीं थी जितनी आज है। पिछले समय में जिस परीक्षण को हम एक ग्राम सैंपल के साथ करते वह अब एक मिलीग्राम के साथ कर सकते हैं। साथ ही नई तकनीक से कई सारे रहस्य सुलझाए जा सकते हैं।

गले की त्वचा की हरकत मात्र से आवाज पहचान लेगा सेंसर

सियोल, पेट्र : वैज्ञानिकों ने एक ऐसा लचीला सेंसर विकसित किया है जो गले की त्वचा के कंपन मात्र से आपकी आवाज पहचान लेगा। वर्तमान में मोबाइल फोन पर वॉयस रिकग्निशन फीचर आसानी से पाया जाता है। लेकिन अक्सर होता यह है कि जब आप किसी मीटिंग या ऑफिस में बातचीत कर रहे होते हैं तो यह फीचर एक्टीवेट हो जाता है और कभी-कभी कई बार आपके लाख कोशिशों के बाद भी यह फीचर आपकी आवाज नहीं पहचानता। कुल मिलाकर इन फीचरों में अभी सटीकता नहीं है।

यह इसलिए होता है क्योंकि मोबाइल में लगा माइक्रोफोन आपकी आवाज पहचानने के लिए ध्वनि में दबाव का पता लगाता है और इसे आसानी से बाहरी शोरगुल प्रभावित कर देता है। साउथ कोरिया की पोहांग यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी के शोधकर्ताओं ने एक ऐसा सेंसर विकसित किया जो आपके त्वचा के कंपन को पहचान सके। यह सेंसर गर्दन से जुड़ा रहता है और जब आप बोलते हैं तो त्वचा की हरकत से यह आपको पहचान लेता है।

वॉयस रिकग्निशन होगा सटीक। प्रतीकात्मक

इस सेंसर में एक अल्ट्राथिन पॉलिमर फिल्म का उपयोग किया गया है साथ ही छोटे छिद्रों का एक डायाफ्राम भी है जो त्वचा के कंपन के त्वरण को मापता है।

बच्चों को बुरी नजर से बचाने को छलांग

स्पेन में नवताज शिशुओं को बुरी नजर से बचाने के लिए प्रतिवर्ष महोत्सव 'एल कोलाचो' मनाया जाता है। इस महोत्सव पर खास तरह का अनुष्ठान होता है। इसमें नवजात शिशुओं को जमीन पर लिटा दिया जाता है और फिर शैतान की पोशाक पहने एक व्यक्ति इन बच्चों के ऊपर से छलांग लगाता है। लोगों की मान्यता से है कि इससे बच्चों को बुरी नजरों से छुटकारा मिला जाता है। कैस्टरिलो डी मर्सिया के उत्तरी एक गांव में अनुष्ठान का दृश्य। इसकी शुरुआत करीब 400 साल पहले 1620 से हुई थी। एएफपी

प्ले कार्ड्स से तैयार की आकृतियां

प्योंगयांग में मई दिवस स्टेडियम में आयोजित उत्तर कोरिया की सर्वाधिक पसंदीदा और लोकप्रिय खेल प्रतिस्पर्धा 'द लैंड ऑफ द पीपुल्स' के दौरान रंग-बिरंगे कार्ड्स के जरिए कोरियाई बच्चों की तैयार की गई बेहद आकर्षक व दर्शनीय आकृतियां। इस दौरान देशभर से आए युवाओं के लिए शारीरिक शक्ति का प्रदर्शन करने की अलग-अलग स्पर्धाएं आयोजित की जाती हैं। साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। इसमें कोरियाई संस्कृति की झलक देखी जा सकती है। एपी

स्क्रीन शॉट

भाई शाहिद की तारीफ में ईशान ने लिखी पोस्ट

अभिनेता शाहिद कपूर की हालिया रिलीज फिल्म 'कबीर सिंह' को लेकर मिली-जुली प्रतिक्रिया सामने आ रही है। मंगलवार को फिल्म सौ करोड़ क्लब में शामिल हो गई। बतौर सोलो हीरो 100 करोड़ क्लब में शामिल होने वाली यह शाहिद कपूर की पहली फिल्म है। बड़े भाई शाहिद की सफलता पर उनके छोटे भाई ईशान खट्टर भी फूले नहीं समा रहे हैं। उन्होंने इंस्टाग्राम पर अपने बड़े भाई के लिए भावुक पोस्ट लिखी। उन्होंने शाहिद के स्क्रीन पर दीवानगी की हद पार करने वाले प्रेमी का चरित्र निभाने के बाद घर पर जिम्मेदार पति और पिता के रूप में लौटने की क्षमता के बारे में बताया। ईशान ने लिखा कि शाहिद उनके लिए हमेशा एक अच्छे इंसान और शानदार उदाहरण रहे हैं। उन्हें यह बात चकित करती है कि इतने जटिल और बिगड़ैल किरदार को वह इतनी सहजता से निभा सकते हैं जबकि घर पर बेहद फोकस और प्यारे इंसान हैं। साथ ही लिखा मुझे यह दिखाने के लिए धन्यवाद कि एक जिम्मेदार बेटा, पिता, पति और भाई होने का क्या मतलब है। छोटे भाई से सार्वजनिक तौर पर तारीफें मिलने पर शाहिद का खुश होना तो लाजमी है।

फिर साथ आएंगे अरबाज और मलाइका?

मलाइका अरोड़ा और अरबाज खान जब से अलग हुए हैं, तब से दोनों किसी न किसी कारण खबरों में रहते ही हैं। कभी मलाइका और अर्जुन कपूर को साथ देखकर उनकी शादी की खबरें तेज हो जाती हैं, तो कभी अरबाज और उनकी कथित गर्लफ्रेंड जॉर्जिया के साथ तस्वीरें सुर्खियां बटोरने लगती हैं। दोनों ने अपने 18 साल की शादी को वर्ष 2017 में खत्म कर दिया था। अब खबरें आ रही हैं कि एक बार फिर मलाइका और अरबाज साथ आ सकते हैं। लेकिन यह साथ रियल लाइफ में नहीं, बल्कि टीवी स्क्रीन पर होगा। दरअसल, 'द कपिल शर्मा' शो के बाद सलमान खान 'नच बलिए' के नौवें सीजन का निर्माण कर रहे हैं। शो की खासियत यह है कि इसमें पांच ऐसे कपल होंगे जो एक-दूसरे के साथ रिश्ते में हैं, जबकि अन्य पांच जोड़ियां वे होंगी जिनमें अलगाव हो चुका है। ऐसे में जज की खाली कुर्सी को मलाइका और अरबाज भर सकते हैं, क्योंकि अलग होने वाले कपल में दोनों चर्चा में रहते हैं। टीम से जुड़े सूत्रों की मानें तो मलाइका और अरबाज को इस शो का प्रबल दावेदार माना जा रहा है। लेकिन ये साथ आने के लिए तैयार होते हैं या नहीं, इसके लिए तो जुलाई तक का इंतजार करना होगा।

दोस्तों द्वारा भेजी मोटरसाइकिलों पर किया था स्टंट

बॉलीवुड में किंग खान के नाम से मशहूर अभिनेता शाह रुख खान ने हिंदी सिनेमा में 27 साल पूरे कर लिए हैं। दरअसल, शाहरुख की पहली फिल्म 'दीवाना' 25 जून, 1992 को रिलीज हुई थी। इसमें उन्होंने बाइक स्टंट भी किया था। इस मौके पर शाह रुख ने ट्विटर पर भी एक वीडियो शेयर किया, जिसके बैकग्राउंड में उनकी डेब्यू फिल्म का गाना 'कोई ना कोई चाहिए' सुनाई दे रहा है। इसके साथ ही शाह रुख ने संदेश दिया, 'भारतीय सिनेमा में मेरे 27 वर्ष पूरे होने पर आप सभी को धन्यवाद। यह समय मेरे धरती पर पूरे जीवन का आधा समय है। मैं पिछले 20 वर्षों से आपका मनोरंजन करने का प्रयास कर रहा हूं। कई बार मैं सफल हुआ और अधिकांश बार असफल हुआ। इसलिए मैं अपनी पहली फिल्म 'दीवाना' में मोटरसाइकिल पर एंट्री करने से लेकर आपके दिल तक पहुंचने व अब तक आपसे मिले प्यार के लिए आपका धन्यवाद करता हूं। आपने न केवल मुझे अपने दिल में जगह दी है, बल्कि मुझे इतने वर्षों तक वहां बनाए भी रखा। आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।' इसके साथ ही अभिनेता ने फैंस को सड़क पर सुरक्षित बाइक चलाने का सुझाव भी दिया। उन्होंने कहा, 'यह केवल संयोग था कि मेरे कुछ दोस्त मोटरसाइकिल कंपनी में थे और उन्होंने स्टंट के लिए दो मोटरसाइकिलें भेजी थीं, जिसे मैंने 27 साल पहले फिल्म 'दीवाना' में इस्तेमाल किया था। मैं आज भी ऐसा ही शॉट देने का प्रयास कर रहा था, पर इसमें कुछ अंतर है। मैंने हेलमेट पहनना जरूरी समझा। आप भी बाइक चलाते समय हमेशा हेलमेट पहनें।'

भारतीय सिनेमा में 27 साल पूरे होने पर सभी को धन्यवाद। - शाह रुख

मॉडलिंग की दुनिया में नहीं लौटना चाहतीं गौहर

रैंप पर डिजाइनर कपड़ों में मॉडल्स ग्लैमरस जरूर लगती हैं, लेकिन उनका काम बहुत मुश्किल होता है। ग्लैमर जगत की चकाचौंध में अक्सर पर्दे के पीछे की कड़वी सच्चाई सामने नहीं आ पाती है। मॉडल्स को उन जितना मेहनताना मिलना चाहिए वह नहीं मिलता है। इसकी गवाह खुद गौहर खान रही हैं। वर्ष 2002 में 18 साल की उम्र में फेमिना मिस इंडिया में भाग ले चुकीं गौहर खान नीता लुला, मनीष मल्होत्रा, रितु कुमार जैसे बड़े डिजाइनर्स के लिए रैंप वॉक कर चुकी हैं। रैंप पर एक बार उनकी ड्रेस फट भी गई थी, लेकिन गौहर ने तब भी पूरे आत्मविश्वास के साथ वॉक पूरा किया था। मॉडलिंग में कुछ समय तक काम करने के बाद उन्होंने फिल्मों में काम करना शुरू कर दिया। इन दिनों वेब शो 'द ऑफिस' में काम कर रहीं गौहर खान को मॉडलिंग की दुनिया अब रास नहीं आती है।

खोज

भारतीय शोधकर्ताओं ने फाइटोकेमिकल्स का उपयोग कर बनाई ईको-फ्रेंडली सामग्री, पत्तियों के अर्क से बनी कोटिंग पूरी तरह से है पर्यावरण के अनुकूल

आम की पत्तियों से बनाई जंगरोधी सामग्री

बेंगलुरु, आइएसडब्ल्यू : भारतीय शोधकर्ताओं ने आम की पत्तियों के अर्क से एक ईको- फ्रेंडली जंगरोधी सामग्री विकसित की है, जो लोहे को जंग से बचा सकती है। यह सामग्री तिरुवनंतपुरम स्थित राष्ट्रीय अंतरविषयी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान के शोधकर्ताओं द्वारा विकसित की गई है।

नई जंग-रोधी सामग्री का परीक्षण वाणिज्यिक रूप से उपयोग होने वाले लोहे पर विपरीत जलवायु परिस्थितियों में करने पर इसमें प्रभावी जंग-रोधक के गुण पाए गए हैं। आमतौर पर, लोहे के क्षरण को रोकने के लिए उस पर पेंट जैसी सिंथेटिक सामग्री की परत चढ़ाई जाती है, जो विषाक्त और पर्यावरण के प्रतिकूल होती है। लेकिन, आम की पत्तियों के अर्क से बनी कोटिंग सामग्री पूरी तरह पर्यावरण के अनुकूल है।

पेड़-पौधों में जैविक रूप से सक्रिय यौगिक (फाइटोकेमिकल्स) पाए जाते हैं जो रोगजनक तत्वों और परभक्षियों को दूर रखते हैं और पौधों के सुरक्षा तंत्र के रूप में काम करते हैं। शोधकर्ताओं ने पौधों के इन्हीं गुणों का अध्ययन किया है और आम के पौधे में प्रचुर मात्रा में पाए जाने वाले फाइटोकेमिकल्स का उपयोग जंग-रोधी पदार्थ बनाने में किया है।

आम की पत्तियों से अर्क बनाने वाले तिरुवनंतपुरम स्थित राष्ट्रीय अंतरविषयी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान के शोधकर्ता आइएसडब्ल्यू

कैसे बनाया अर्क : शोधकर्ताओं ने एथेनॉल के उपयोग से आम की सूखी पत्तियों से फाइटोकेमिकल्स प्राप्त किया। सूखी पत्तियों में अधिक मात्रा में में जैविक रूप से सक्रिय तत्व पाए जाते हैं। इसके बाद पत्तियों के अर्क की अलग-अलग मात्रा का विद्युत-रासायनिक विश्लेषण किया। 200 पीपीएम अर्क के नमूनों में सबसे अधिक जंग-रोधी गुण पाए गए हैं। अध्ययनकर्ताओं में शामिल डॉ. निशांत के गोपालन ने बताया कि इस शोध में हमें पता चला है कि जैविक रूप से सक्रिय तत्व मिलकर एक खास कार्बधात्विक यौगिक बनाते हैं, जिनमें जंग-रोधक गुण होते हैं। पत्तियों के अर्क में जंग-रोधी गुणों का परीक्षण जैव-रासायनिक प्रतिबाधा स्पेक्ट्रोस्कोपी और लोहे की सतह पर जंग का मूल्यांकन एक्स-रे फोटो-इलेक्ट्रॉन स्पेक्ट्रोस्कोपी से किया गया है। इस तरह, शोधकर्ताओं को जैविक रूप से सक्रिय तत्वों की जंग-रोधी भूमिका के बारे में पता चला है। इस कोटिंग सामग्री को 99 प्रतिशत तक जंग-रोधी पाया गया है जो आम के पत्तों के अर्क के जंग-रोधक गुणों को दर्शाता है।

लोहे पर सिर्फ अर्क की परत टिकाऊ नहीं हो सकती। इसीलिए, शोधकर्ताओं ने अर्क को सिलिका के साथ मिलाकर मिश्रण तैयार किया गया है। इस मिश्रण को एक प्रकार की गोंद एपॉक्सी में मिलाकर कोटिंग सामग्री तैयार की गई है। मुख्य शोधकर्ता कृष्णप्रिया के विदु ने कहा कि हम विभिन्न तापमान और पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुसार, आम की पत्तियों के अर्क का परीक्षण करना चाहते हैं। शोधकर्ताओं में डॉ. निशांत के गोपालन और कृष्णप्रिया विदु के अलावा तेजस पेरिनगट्टू कलारीक्कल और नित्या जयकुमार शामिल थे।